अध्याय

01

# माता का आँचल

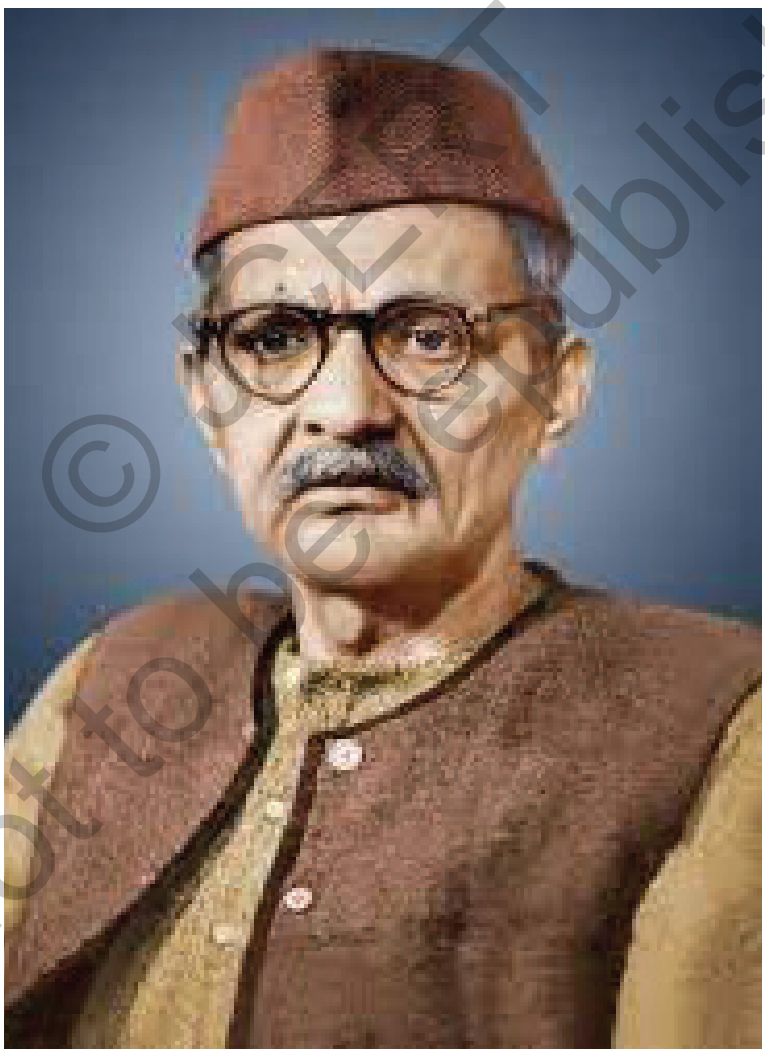

## शिवपूजन सहाय

© NCERT not to be republished

# शिवपूजन सहाय

## जीवन परिचय

**जन्म 9 अगस्त 1893, गाँव- उनवांस, शाहाबाद, बिहार।**

शिक्षा-प्रारम्भिक शिक्षा आरा (बिहार) में हुई। उनके बचपन का नाम भोलानाथ था। दसवीं की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी की। बाद में वे हिंदी के अध्यापक बन गए।

**मृत्यु- 21 जनवरी 1963, पटना**

## साहित्यिक परिचय

I. 1921 से कलकत्ता में पत्रकारिता आरम्भ की। 1924 में लखनऊ में प्रेमचंद के साथ 'माधुरी' का सम्पादन किया। 1926 से 1933 तक काशी में प्रवास और पत्रकारिता तथा लेखन। 1934 से 1939 तक पुस्तक भंडार, लहेरिया सराय में सम्पादन-कार्य किया।

II .प्रारम्भिक लेख 'लक्ष्मी', 'मनोरंजन' तथा 'पाटलीपुत्र' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित होते थे।

III. 1939 से 1949 तक राजेंद्र कॉलेज, छपरा में हिंदी के प्राध्यापक रहे। 1950 से 1959 तक पटना में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के निदेशक रहे।

IV. उपन्यास, कहानी आदि विधाओं में लेखन

**V.प्रमुख रचनाएँ –**
**कथा एवं उपन्यास, वे दिन वे लोग – 1963 ई., कहानी का प्लॉट – 1965 ई., मेरा जीवन – 1985 ई., स्मृतिशेष – 1994 ई., हिन्दी भाषा और साहित्य – 1996, ग्राम सुधार – 2007 ई., देहाती दुनिया – 1926 ई.**

© JCERT not to be republished

**VI.पुरस्कार एवं सम्मान** – उन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में सन 1960 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था।

1962 में भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा दी. लिट्. की मानद उपाधि।

**VII.भाषा एवं शैली** – उनकी भाषा सहज थी। इन्होंने उर्दू के शब्दों का प्रयोग धड़ल्ले से किया है और प्रचलित मुहावरों के सन्तुलित प्रयोग द्वारा लोकरुचि का स्पर्श करने की कोशिश की है।

## पाठ का सार

'माता का अँचल' शीर्षक पाठ उपन्यास 'देहाती दुनिया' से लिया गया है।

लेखक ने' माता का अँचल' पाठ में शैशव-काल के बाल-सुलभ क्रियाकलापों को रेखांकित किया है, जिसमें माता-पिता के स्नेह तथा शिशुमंडली द्वारा मिल-जुलकर खेले जाने वाले खेलों को उद्धृत किया गया है।

लेखक ने स्पष्ट किया है कि शिशु का पिता उसके साथ भले ही अधिक समय बिताता हो, दोनों भले ही एक-दूसरे के साथ अत्यधिक स्नेह करते हो, किंतु आपदाओं में माँ के आँचल में ही शिशु को शरण मिलती है।

4.लेखक बचपन से ही पिता के साथ अधिक रहता था ,माता से दूध पीने तक संबंध था।

5.लेखक के पिता का उनसे कुश्ती लड़ना और हारना, लेखक द्वारा पिता के छाती पर चढ़कर मूँछें उखाड़ना, पिताजी द्वारा लेखक के हाथ चूमना आदि क्रियाओं से लेखक ने बाल-मनोविज्ञान का परिचय पाठकों को कराया है।

© JCERT not to be republished

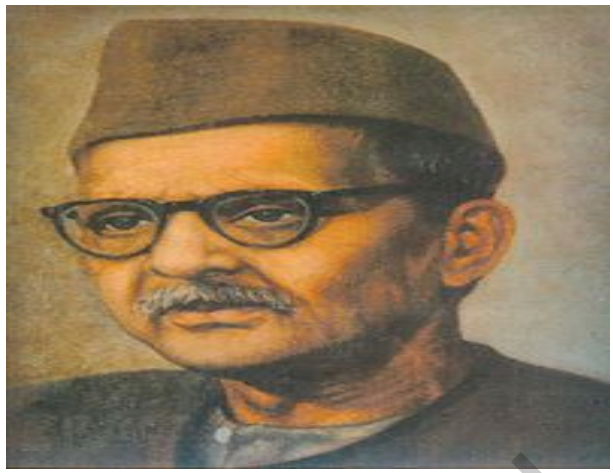

# महत्वपूर्ण गद्यांशों की व्याख्या

**गद्यांश–1** कभी-कभी बाबूजी हमसे कुश्ती भी लड़ते। वह शिथिल होकर हमारे बल को बढ़ावा देते और हम उनको पछाड़ देते थे। वह उतान पड़ जाते और हम उनकी छाती पर चढ़ जाते थे। जब हम उनकी लंबी -लंबी मूँछें उखाड़ने लगते तब वह हँसते-हँसते हमारे हाथों को मूँछों से छुड़ाकर उन्हें चूम लेते थे । फिर जब हमसे खट्टा और मीठा चुम्मा माँगते तब हम बारी-बारी कर अपना बायाँ और दाहिना गाल उनके मुँह की ओर फेर देते थे। बायें का खट्टा चुम्मा लेकर जब वह दाहिने का मीठा चुम्मा लेने लगते तब अपनी दाढ़ी या मूँछ हमारे कोमल गालों पर गड़ा देते थे। हम झुँझलाकर फिर उनकी मूँछें नोचने लग जाते थे। इस पर वह बनावटी रोना रोने लगते और हम अलग खड़े-खड़े खिल-खिलाकर हँसने लग जाते थे।

**प्रसंग –** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग- 2 के 'माता का आँचल' नामक पाठ से अवतरित है। इसके रचयिता शिवपूजन सहाय है। गद्यांश में लेखक ने अपने बचपन के बाल -सुलभ चेष्टाएँ एवं अपने पिता के प्रेम का चित्रण किया है।

**व्याख्या –** अपने बचपन की बाल -सुलभ क्रियाओं का वर्णन करते हुए लेखक कहते हैं कि बचपन में हमें माता और पिता द्वारा बहुत प्रेम मिला। हम शरारत करते थे तो हमारे पिताजी द्वारा उसका आनंद लिया जाता था। लेखक इन्हीं क्रियाओं में से कुछ का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जब हम कुश्ती लड़ते और हारने लगते तो पिताजी हमें जिताने के लिए खुद हार जाते थे। हम कभी-कभी उनकी मूँछें उखाड़ने लगते तो मूँछों से हाथ छुड़ाकर हाथों को चूम लिया करते थे। जब हम फिर मूँछ नोचने लगते तो वह बनावटी रोना रो देते थे अर्थात् रोने का अभिनय कर देते थे और हम खिलखिला कर हँस देते थे।

© JCERT not to be republished

**विशेष –** बाल सुलभ चेष्टाओं का वर्णन है।

पिता का अपने पुत्र के प्रति प्रेम उनके क्रिया-कलापों से उभर कर आता है।

**गद्यांश-2** जब कभी मइयाँ हमें अचानक पकड़ पाती तब हमारे लाख झटपटाने पर भी एक चुल्लू कड़वा तेल हमारे सिर पर डाल ही देती थी। हम रोने लगते और बाबूजी उस पर बिगड़ खड़े होते ;पर वह हमारे सिर में तेल बोथकर हमें उबटकर ही छोड़ती थी । फिर हमारी नाभी और लिलार में काजल की बिंदी लगाकर चोटी गूँथती और उसमें फूलदार लट्टू बाँधकर रंगीन कुर्ता -टोपी पहना देती थी। हम खासे 'कन्हैया' बनकर बाबू जी की गोद में सिसकते-सिसकते बाहर आते थे।

**प्रसंग –** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग- 2 के 'माता का आँचल' नामक पाठ से अवतरित है। इसके रचयिता शिवपूजन सहाय है।गद्यांश में लेखक ने अपने बचपन की बाल -सुलभ चेष्टाओं एवं अपनी माँ की ममता एवं प्रेम का चित्रण किया है।

**व्याख्या –** बचपन में माँ की ममतामयी पलों को याद करते हुए लेखक कहते हैं कि हम बालों में तेल लगाने एवं चोटी बनवाने के लिए हमेशा आनाकानी करते थे। माँ के हाथ कभी आ जाते तो वह लाख छटपटाने पर भी सरसों का तेल हमारे सिर पर डाल देती थी। बाबू जी के बार -बार कहने पर भी वह यह काम नहीं छोड़ती।उसके बाद नाभी व् मस्तक में काजल की बिंदी लगाकर बालों की चोटी बना दिया जाता और रंगीन टोपी -कुर्ता पहना दिया जाता था।फिर हम कृष्ण कन्हैया जैसे बनकर बाबूजी की गोद में सिसकते हुए जाकर बैठ जाते थे ।

**विशेष –** आँचलिक शब्दों का प्रयोग से गद्य सुन्दर बन पड़ा है।

© JCERT not to be republished

**गद्यांश–3** कभी–कभी हम लोग बरात का भी जुलूस निकालते थे। कनस्तर का तंबूरा बजता, अमोले को घिसकर शहनाई बजायी जाती, टूटी चूहेदानी की पालकी बनती, हम समधी बनकर बकरे पर चढ़ लेते और चबूतरे के एक कोने से चलकर बरात दूसरे कोने में जाकर दरवाज़े लगती थी। वहाँ काठ की पटरियों से घिरे, गोबर से लिपे, आम और केले की टहनियों से सजाए हुए छोटे आँगन में कुल्हिए का कलसा रखा रहता था। वहीं पहुँचकर बरात फिर लौट आती थी। लौटने के समय खटोली पर लाल ओहार डालकर, उसमें दुलहिन को चढ़ा लिया जाता था । लौट आने पर बाबू जी ज्यों ही ओहार उघारकर दुलहिन का मुख निरखने लगते त्यों ही हम लोग हँसकर भाग जाते।

**प्रसंग –** प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग– 2 के 'माता का आँचल' नामक पाठ से अवतरित है। इसके रचयिता शिवपूजन सहाय है। गद्यांश में लेखक अपने बचपन में खेले जाने वाले तरह -तरह के खेलों को याद कर रहें हैं।

**व्याख्या –** बचपन में खेले जाने वाले विभिन्न खेलों को याद करते हुए लेखक कहते हैं कि हम लोग बचपन में तरह- तरह के खेल खेलते थे। जिसमें बरात का जुलूस निकालना प्रमुख रूप से होता था। इसके लिए कनस्तर को तंबूरे की तरह , अमोले को शहनाई की तरह, टूटी हुई चूहेदानी को पालकी की तरह प्रयोग किया जाता था। हम समधी की भूमिका में रहते और घोड़े के स्थान पर बकरे पर सवार होते थे ।चबूतरे के एक कोने से चलकर बरात दूसरे कोने में जाती ,जिस तरह बराती एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाती है। फिर बरात वापस लौट आते थे। लौटते समय खटोली पर लाल परदा डालकर दुल्हन को चढ़ा दिया जाता था। इस खेल को देखने के लिए बाबूजी आते और परदे को उठाकर दुल्हन का मुख देखने लगते तो हम लोग हँस कर भाग जाते थे।

**विशेष –** बच्चों के खेल का आनंद कैसे बुजुर्ग लोग लेते थे इसकी बानगी देखते बनता है।

© JCERT not to be republished

**शब्दार्थ-**

मृदंग- एक तरह का वाद्ययंत्र।

खरचे - व्यय

अँचल - आँचल

तड़के - सवेरे

लिलार - ललाट

भभूत - राख

झुँझलाकर - खीझकर

त्रिपुंड - माथे पर लगाए जाने वाला तीन आड़ी रेखाओं का तिलक

रमाने - लगाने

पोथी - धार्मिक ग्रंथ

विराजमान - उपस्थित

जीमना - भोजन करना

शिथिल - ढीला

पछाड़ना - हराना

उतान - पीठ के बल लेटना

गोरस - दूध

अफर - भरपेट से अधिक खा लेना

सानना - मिलाना, लपेटना, गूँधना

ठौर - स्थान

कडवा तेल - सरसों का तेल

बोथना - सराबोर कर देना

चँदोआ - छोटा शामियाना, कपड़े, फूलों आदि का छोटा मंडप।

ज्योनार - भोज ,दावत

अमोले - आम का उगता हुआ पौधा

ओहार - परदे के लिए डाला हुआ कपड़ा

कसोरे- मिट्टी से बना छिछला कटोरा

रहरी - अरहर

अँठई - कुत्ते के शरीर में चिपके रहने वाले छोटे कीड़े , किलनी

चिरौरी - दीनतापूर्वक की जाने वाली प्रार्थना, विनती

ओसारे- बरामदा

अमनिया - साफ ,स्वच्छ

मरदुए - पुरुष

महतारी - माता

दियासलाई- माचिस

घरौंदा- मिटटी का घर

काठ - लकड़ी

नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना

कनस्तर- टीन का पीपा

© JCERT not to be republished

# प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?**

उत्तर -माता से बच्चे का ममत्व का रिश्ता होता है। वह चाहे अपने पिता से कितना प्रेम करता हो या पिता अपने बच्चे को कितना भी प्रेम देता हो पर जो आत्मीय सुख माँ की छाया में प्राप्त होता है वह पिता से प्राप्त नहीं होता। भोलानाथ का अपने पिता से अपार स्नेह था पर जब उस पर विपदा आई तो उसे जो शाँति व प्रेम की छाया अपनी माँ की गोद में जाकर मिली वह शायद उसे पिता से प्राप्त नहीं हो पाती। माँ के आँचल में बच्चा स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है। लेखक ने इसलिए पिता पुत्र के प्रेम को दर्शाते हुए भी इस कहानी का नाम माँ का आँचल रखा है।

**प्रश्न 2. आपके विचार से भोलनाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?**

उत्तर-उसे अपनी मित्र मंडली के साथ तरह-तरह की क्रीड़ा करना अच्छा लगता है। वे उसके हर खेल व हुड़दंग के साथी है। उनके साथ वह सबकुछ भूल जाता है। गुरू जी द्वारा गुस्सा करने पर वह अपने पिता की गोद में रोने* बिलखने लगता है परन्तु अपने मित्रों को मजा करते देख वह स्वयं को रोक नहीं पाता। मार की पीड़ा खेल की क्रीड़ा के आगे कुछ नहीं लगती। इसलिए रोना भुलकर वह दुबारा अपनी मित्र मंडली में खेल का मजा लेने लगता है।

**प्रश्न 3. आपने देखा होगा कि भोलानाथ और उसके साथी जब* तब खेलते* खाते समय किसी न किसी प्रकार की तुकबंदी करते हैं। आपको यदि अपने खेलों आदि से जुड़ी तुकबंदी याद हो तो लिखिए।**

उत्तर-अपने अनुभव के आधार पर इस प्रश्न का उत्तर दें।

**प्रश्न 4. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?**

उत्तर-भोलानाथ व उसके साथी परम्परागत खेल खेलते थे। उनके लिए खेल की सामग्री मिट्टी के बर्तन, पत्थर, पेड़ों के पत्ते, गीली मिट्टी आदि होती थी, परन्तु आज हमारे खेलने का सामान इन सब वस्तुओं से भिन्न हैं । हमारे खेल क्रिकेट, शतरंज ,फुटबॉल, वीडियो गेम ,कम्प्यूटर गेम आदि तरह-तरह के हैं ।भोलानाथ जैसे बच्चों के खेल सामग्री सुलभता से एवं बिना खर्च किए ही प्राप्त हो जाती थी , परन्तु आजकल के बच्चों की खेल- सामग्री अधिकतर खर्च करने पर ही प्राप्त होती है।

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 5. पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों।**

उत्तर-1. भोलनाथ जब अपने पिता की गोद में बैठा हुआ आईने में अपने प्रतिबिम्ब को देखकर खुश होता रहता है। वहीं पिता द्वारा रामायण पाठ छोड़कर देखने पर लजाकर व मुस्कुराकर आईना रख देना ।

2. बच्चों द्वारा बारात का स्वांग रचते हुए दुल्हन को लिवा लाना व पिता द्वारा दुल्हन का घूँघट उठाने पर सब बच्चों का भाग जाना।इसमें बच्चों के खेल के प्रति समाज का रुझान झलकता है।

3. बच्चे का अपने पिता के साथ कुश्ती लड़ना, शिथिल होकर बच्चे के बल को बढ़ावा देना और पछाड़ खाकर गिर जाना,बच्चे का अपने पिता की मूँछ खींचना और पिता का इस क्रिया में प्रसन्न होना, बहुत ही आनन्दमयी प्रसंग है।

**प्रश्न 6. इस उपन्यास अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण- संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं।**

उत्तर-तीस के दशक की ग्रामीण-संस्कृति में बनावटी (दिखावा) जीवन का अभाव था। लोग बहुत ही सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते थे। उस समय ग्रामीण -परिवेश के लोगों पर विज्ञान का अधिक प्रभाव नहीं था। लोग बाज़ार अथवा दूसरों पर कम आश्रित थे। चोट लगने अथवा बीमार पड़ने पर भी दवाइयों के स्थान पर घरेलु नुस्ख़ों का अधिक प्रयोग करते थे।

पहले की तुलना में आज की ग्रामीण संस्कृति में काफी परिवर्तन आए हैं। अब गाँव में भी विज्ञान का प्रभाव बढ़ता जा रहा है; जैसे- लालटेन के स्थान पर बिजली, बैल के स्थान पर ट्रैक्टर का प्रयोग, घरेलु खाद के स्थान पर बाज़ार में उपलब्ध कृत्रिम खाद का प्रयोग तथा विदेशी दवाइयों का प्रयोग किया जा रहा है। पहले की तुलना में अब किसानों (खेतिहर मज़दूरों) की संख्या घट रही है। घर की छोटी-छोटी चीज़ों के लिए भी लोग दूसरों पर आश्रित हैं।

**प्रश्न 7. पाठ पढ़ते-पढ़ते आपको भी अपने माता-पिता का लाड़-प्यार याद आ रहा होगा। अपनी इन भावनाओं को डायरी में अंकित कीजिए।**

उत्तर-अपने अनुभवों पर इस प्रश्न का उत्तर दीजिये।

**प्रश्न 8. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर- भोलानाथ के पिता एक सजग, व स्नेही पिता है। उनके दिन का आरम्भ ही भोलानाथ के साथ शुरू होता है। उसे नहलाकर पूजा-पाठ कराना, अपने साथ घुमाने ले जाना, उसके साथ खेलना व उसकी बालसुलभ क्रीड़ा से प्रसन्न होना, उनके स्नेह व प्रेम को व्यक्त करता है। उसको ज़रा सी भी पीड़ा हो जाए तो वह तुरन्त उसकी रक्षा के प्रति सजग

© JCERT not to be republished

हो जाते है। गुरू जी द्वारा सजा दिए जाने पर वह उनसे माफी माँग कर अपने साथ ही लिवा लाते हैं। यहाँ भोलानाथ के लिए उनके असीम प्रेम व सजगता का प्रमाण मिलता है। भोलानाथ की माता का हृदय वात्सल्य व ममत्व से भरा है। भोलानाथ को भोजन कराने के लिए उनका तरह-तरह से स्वांग रचना एक स्नेही माता की ओर संकेत करता है। जो अपने पुत्र के भोजन को लेकर चिन्तित है। दूसरी ओर उसको लहूलुहान व भय से काँपता देखकर माँ का हृदय भी दुखी हो जाता है। वह सारे काम छोड़कर अपने पुत्र को अपनी बाँहों में भरकर उसको सात्वंना देने का प्रयास करती है। अपने आँचल से उसके शरीर को साफ करती है। इन्हीं सब क्रियाओं से उनकी माँ का अपने पुत्र के प्रति निश्छल प्रेम, ममत्व व वात्सल्य का पता चलता है।

**प्रश्न 9. माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।**

उत्तर इस कहानी में माँ के आँचल की सार्थकता को समझाने का प्रयास किया गया है। भोलानाथ को माता व पिता दोनों से बहुत प्रेम मिला है। उसका दिन पिता की छत्रछाया में ही शुरू होता है। पिता उसकी हर क्रीड़ा में सदैव साथ रहते हैं, विपदा होने पर उसकी रक्षा करते हैं। परन्तु जब वह साँप को देखकर डर जाता है तो वह पिता की छत्रछाया के स्थान पर माता की गोद में ही प्रेम व शान्ति का अनुभव करता है। माता उसके भय से भयभीत है, उसके दु:ख से दुखी है। वह अपने पुत्र की पीड़ा को देखकर अपनी सुध-बुध खो बैठती है। वह बस इसी प्रयास में है कि वह अपने पुत्र की पीड़ा को दूर कर सके। माँ का यही प्रयास उसके बच्चे को आत्मीय सुख व प्रेम का अनुभव कराता है। इसीलिए शीर्षक 'माता का अँचल' है । इसके लिए एक उपयुक्त शीषर्क और हो सकता था माँ की ममता क्योंकि कहानी में माँ का स्नेह ही प्रधान है।

**प्रश्न 10. बच्चे माता* पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?**

उत्तर- बच्चे अपने माता-पिता के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति अपनी विविध प्रकार की हरकतों से करते हैं -

1. वे अपने माता-पिता से हट द्वारा अपनी माँगे मनवाते हैं और मिल जाने पर उनको विभिन्न तरह से प्यार करते हैं।
2. माता-पिता के साथ नाना* प्रकार के खेल खेलकर।
3. माता-पिता को अपने रोज़मर्रा के खेल और बातों को बताकर।
4. माता-पिता की गोद में बैठकर या पीठ पर सवार होकर।
5. माता-पिता के साथ रहकर उनसे अपना प्यार व्यक्त करते हैं।

**प्रश्न 11. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?**

उत्तर- यह कहानी उस समय की कहानी प्रस्तुत करती हैं जब बच्चों के पास खेलने के लिए अत्याधिक साधन नहीं होते थे। वे लोग अपने खेल प्रकृति से ही प्राप्त करते थे और उसी प्रकृति के साथ खेलते थे। उनके लिए मिट्टी, खेत, पानी, पेड़, मिट्टी के बर्तन आदि साधन थे।

© JCERT not to be republished

परन्तु आज के बच्चों की दुनिया इन बच्चों से भिन्न है। आज के बच्चे टी.वी., कम्प्यूटर आदि में ही अपना समय व्यतीत करते हैं या फिर क्रिकेट, बेडमिन्टन, चाकॅलेट, पिज़ा आदि में ही अपना बचपन बिता देते हैं।

## वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

**प्रश्न 1. 'माता का आँचल' नामक कहानी के लेखक कौन हैं?**

(a) कमलेश्वर (b) शिवपूजन सहाय

(c) प्रेमचंद (d) मधु कांकरिया

उत्तर- (b) शिवपूजन सहाय

**प्रश्न 2. लेखक बचपन में किसका तिलक लगाता था?**

(a) चंदन का (b) गोरस का

(c) रोली का (d) भभूत का

उत्तर- (d) भभूत का

**प्रश्न 3. भभूत लगाने से लेखक क्या बन जाते थे?**

(a) श्रीकृष्ण (b) श्रीराम

(c) बम-भोला (d) राजकुमार

उत्तर- (c) बम-भोला

**प्रश्न 4. लेखक का वास्तविक नाम क्या था?**

(a) तारकेश्वरनाथ (b) महेशनाथ

(c) पृथ्वीराज (d) भोलानाथ

उत्तर- (a) तारकेश्वरनाथ

**प्रश्न 5. लेखक के पिता बचपन में उसे क्या कहकर पुकारते थे ?**

(a) नाथ (b) भोलानाथ

(c) अमरनाथ (d) शिव महाराज

उत्तर- (b) भोलानाथ

**प्रश्न 6. लेखक के पिता कितनी बार 'राम' शब्द लिखकर 'रामनामा बही' पोथी बंद करते थे?**

(a) पाँच सौ बार (b) छह सौ बार

(c) सात सौ बार (d) एक हज़ार बार

उत्तर-(d) एक हज़ार बार

**प्रश्न 7. 'मरदुए' शब्द कहानी में किसने किसके लिए प्रयोग किया है?**

(a) लेखक ने पिता के लिए

(b) लेखक की माता ने उसके पिता के लिए

(c) लेखक की माता ने लेखक के लिए

(d) इनमें से किसी ने नहीं

उत्तर-(b) लेखक की माता ने उसके पिता के लिए

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 8. 'ठौर' शब्द का अर्थ है-**

(a) ठहरना (b) दौड़ना

(c) स्थान (d) आकाश

उत्तर- (c) स्थान

**प्रश्न 9. लेखक गली में कौन-सा खिलौना लेकर जाते थे?**

(a) कार (b) बैलगाड़ी

(c) हाथी (d) काठ का घोड़ा

उत्तर- (d) काठ का घोड़ा

**प्रश्न 10. लेखक को बचपन में कैसे खेल पसंद थे?**

(a) तरह-तरह के नाटक करना

(b) गिल्ली-डंडा खेलना -

(c) लुका-छिपी खेलना

(d) चोर-सिपाही बनना

उत्तर-(a) तरह-तरह के नाटक करना

**प्रश्न 11. बच्चों की शिकायत किस व्यक्ति ने की थी?**

(a) लेखक के पिता ने

(b) बाग के मालिक ने

(c) मूसन तिवारी ने

(d) लेखक की माता ने

उत्तर- (c) मूसन तिवारी ने

**प्रश्न 12. 'चिरौरी करना' का क्या अर्थ है?**

(a) चिड़ाना (b) नकल करना

(c) चोरी करना (d) विनती करना

उत्तर- (d) विनती करना

**प्रश्न 13. "चिड़िया की जान जाए, लड़कों का खिलौना।" ये शब्द किसने कहे?**

(a) लेखक के पिता जी और उनके मित्रों ने

(b) लेखक की माता ने

(c) लेखक के मित्रों और उनके मित्रों ने

(d) खेत के मालिक ने

उत्तर- (a) लेखक के पिता जी और उनके मित्रों ने

**प्रश्न 14. भोलानाथ को सबसे अच्छा क्या लगता है?**

(a) भोजन खाना (b) पढ़ना

(c) खेलना (d) सोना

उत्तर- (c) खेलना

**प्रश्न 15. शिवपूजन सहाय का जन्म कब हुआ ?**

(a) 9 अगस्त 1887

(b) 9 अगस्त 1888

(c) 9 अगस्त 1890

(d) 9 अगस्त 1893

उत्तर- (d) 9 अगस्त 1893

© JCERT not to be republished

**प्रश्न 16. शिवपूजन सहाय का जन्म कहाँ हुआ था ?**

(a) अररिया ,बिहार

(b) शाहाबाद, बिहार

(c) औरंगाबाद, बिहार

(d) खगड़िया, बिहार

उत्तर- (b) शाहाबाद, बिहार

**प्रश्न 17. अमोले शब्द का क्या अर्थ है ?**

(a) अमरता

(b) आम का रस

(c) आम का उगता हुआ पौधा

(d) जिसका मोल न हो

उत्तर- (c) आम का उगता हुआ पौधा

**प्रश्न 18. 'नौ दो ग्यारह होना' मुहावरे का सही अर्थ है -**

(a) तेज गति से चलना

(b) जोर से भागना

(c) भाग जाना

(d) दूर जाकर रहना

उत्तर- (c) भाग जाना

**प्रश्न 19. अफर जाना शब्द का सही अर्थ है -**

(a) ज़ोर से हाँफना

(b) खा जाना

(c) भरपेट से अधिक खाना

(d) हाँफते -हाँफते दौड़ना

उत्तर- (c) भरपेट से अधिक खाना

© JCERT not to be republished